प्र० असामान्य मनोविज्ञान क्या है?

उ० असामान्य मनोविज्ञान की परिभाषा भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न रूपों में देने का प्रयास किया है। उनकी परिभाषाओं में बहुत हद तक समानताएँ पाई जाती है।

Page - 1976 के अनुसार "असामान्य मनोविज्ञान वास्तव में मनोविज्ञान की वह शाखा है जो असामान्य व्यक्तियों के मानसिक प्रक्रियाओं तथा व्यवहारों के अध्ययन तक सीमित है।

Coleman, 1988 के अनुसार "असामान्य मनोविज्ञान वस्तुत: मनोविज्ञान का वह क्षेत्र है जो असामान्य व्यवहार को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के विकास एवं समाकलन का प्रयास करता है।

Kisher 1985 ने भी असामान्य मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि "असामान्य मनोविज्ञान का एक विशिष्ट क्षेत्र है जो व्यक्तित्व उपद्रवों तथा व्यवहार विकृतियों का अध्ययन करता है।

* Characteristics or Nature of Abnormal People or Abnormal Behaviour

असामान्य व्यक्ति के द्वारा होने वाले व्यवहार को असामा

व्यवहार कहते हैं और असामान्य व्यवहार करने वाले व्यक्ति को असामान्य व्यक्ति कहते हैं। अतः सामान्य व्यक्ति के अध्ययन से असामान्य व्यवहार के स्वरुप या विशेषण की जानकारी होती है, और इसी तरह असामान्य व्यवहार के अध्ययन से असामान्य व्यक्ति की पहचान होती है। अतः असामान्य व्यक्ति अथवा असामान्य व्यवहार के स्वरुप या विशेषता के सम्बन्ध निम्नलिखित बातें मुख्य हैं :

i) परिस्थिति से असंगत (Inappropriate to the situation)

— असामान्य व्यवहार की एक मुख्य विशेषता यह है कि वह परिस्थिति के अनुकूल नहीं होता है। किसी शव-यात्रा (funeral procession) में भाग लेते समय हँसना, या खुशी मनाना वास्तव में परिस्थिति से असंगत (inappropriate) तथा अनुपयुक्त व्यवहार है। इसलिए इस व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहेंगे। इसी तरह परिस्थिति से असंगत प्रत्येक व्यवहार को असामान्य व्यवहार तथा ऐसे व्यवहार को करने वाले व्यक्ति को असामान्य व्यक्ति कहा जाएगा।

ii) निर्धारित नियम से विसंगत (Discordant to the rule)

— असामान्य व्यवहार की एक पहचान यह है कि ऐसा व्यवहार वास्तव में निर्धारित नियम के खिलाफ होता है प्रत्येक देश, संस्कृति या समाज के कुछ निर्धारित नियम होते हैं। इन नियमों के प्रतिकूल होने वाले

व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहा जाता है। जैसे – भारत में समजातीय लैंगिक व्यवहार (homosexual behaviour) निर्धारित नियम से असंगत या प्रतिकूल है। इसलिए इस व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहा जाएगा। इसी तरह प्रत्येक व्यवहार जो निर्धारित नियम या मानक (standard) के प्रतिकूल हो, उसे सामान्य व्यवहार कहेंगे और ऐसे व्यवहार करने वाले व्यक्ति को असामान्य व्यक्ति कहा जाएगा।

iii) औसत से विचलित (Deviant from the average)

– असामान्य व्यवहार की एक विशेषता यह है कि वह औसत लोगों के व्यवहार से विचलित या भिन्न होता है। दूसरे शब्दों में, असामान्य व्यवहार वह व्यवहार है जो किसी समाज, संस्कृति या राष्ट्र के अधिकांश लोगों (Majority people) के व्यवहार से भिन्न विचलित (deviated) होता है।

iv) संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व (Emotionally immature)

– असामान्य व्यवहार वास्तव में संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व (immature) होता है। जैसे – बिना किसी ज्ञात कारण के हँसना या रोना, जिस परिस्थितियों में केवल मुस्कुराने की जरूरत हो, वहाँ जोर-जोर से हँसना, जिस परिस्थिति में हँसना अपेक्षित हो वहाँ रोना आदि व्यवहार वास्तव में संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व व्यवहार है। अतः ऐसे व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहेंगे तथा ऐसे व्यवहार करने वाले को असामान्य

v) दुर्बल अनुकूली मूल्य (Poor adaptive value):

— असामान्य व्यवहार की एक पहचान या विशेषता यह है कि ऐसे व्यवहार में अनुकूलन (adaptation) की क्षमता बहुत कम होती है। परिस्थिति में परिवर्तन होने के साथ-साथ व्यवहार में परिवर्तन होना आवश्यक होता है लेकिन असामान्य व्यवहार में यह विशेषता नहीं पाई जाती है। जैसे एक सामान्य व्यक्ति अपनी श्रेणी (Role category) के अनुकूलन अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। अपना व्यवहार पिता की भूमिका में, शिक्षक की भूमिका में, मित्र की भूमिका में अथवा पति की भूमिका में बदलता रहता है।

vi) सामाजिक रूप से अनुपयुक्त (Socially misfit)

— असामान्य व्यवहार वास्तव में सामाजिक रूप से बेमेल या अनुपयुक्त होता है। यह व्यवहार समाज के दूसरे लोगों के व्यवहार से मेल नहीं खाता है, जैसे — हिन्दू समाज में चचेरे भाई-बहनों के बीच विवाह (cousin marriage) होना एक बेमेल या अनुपयुक्त व्यवहार है। अतः इसे एक असामान्य व्यवहार कहा जाएगा और ऐसे व्यवहार को करने वाले व्यक्तियों को असामान्य व्यक्ति कहेंगे।

vii) दूसरे के लिए हानिकर (Harmful for others)

— असामान्य व्यवहार की एक पहचान यह है कि वह दूसरे

Scanned with CamScanner

लोगों के लिए हानिकर (harmful) तथा कष्टकर (troublesome) होता है। जब असामान्य व्यवहार अधिक गम्भीर होता है तो दूसरे के लिए अधिक कष्टदायक होता है। जैसे मानसिक दुर्बलता (mental Retardation) तथा मनोविकृति (Psychosis) के रोगियों के व्यवहारों से परिवार, समाज तथा राष्ट्र को भारी नुकसान होता है। लेकिन जब असामान्य व्यवहार साधारण होता है तो दूसरों के लिए अपेक्षाकृत कम कष्टकर होता है।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि असामान्यता (abnormality) असामान्य व्यवहार (abnormal behaviour) या असामान्य व्यक्ति (abnormal person) की उपर्युक्त कई विशेषताएँ (characteristics) या पहचान (signs) हैं। इन विशेषताओं या पहचानों के आधार पर हम बहुत आसानी से यह बतला सकते हैं कि अमुक व्यवहार अथवा अमुक व्यक्ति असामान्य है या नहीं।

Scanned with CamScanner

8. ईगो अवसरवादी होता है (The ego is opportunist) —

Scanned with CamScanner

(यदि भौतिक जगत अनुकूल होता है तो किसी कार्य या इच्छा को पूरा होने देता है। यह गुण इड तथा सुपर ईगो में नहीं पाया जाता है।

6. ईगो का सम्बन्ध नैतिकता से नहीं होता है (The ego is not concerned with morality) —

इड की तरह ईगो का सम्बन्ध नैतिकता से नहीं होता है। अन्तर केवल इतना है कि पूर्णतः अचेतन होने के कारण इड अपनी अनैतिक इच्छा की संतुष्टि ऐसी परिस्थितियों में भी करना चाहता है जबकि परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती हैं। दूसरी ओर चेतन होने के कारण ईगो ऐसी परिस्थितियों में अनैतिक इच्छाओं की संतुष्टि नहीं होने देता है। वह अनैतिक इच्छाओं की सन्तुष्टि केवल अनुकूल परिस्थितियों में ही होने देता है।

7. ईगो में व्यावहारिक उपागम होता है (The ego has a practical approach) —

व्यावहारिक उपागम पर कार्यरत होता है। वह व्यवहार कुशल होता है। व्यावहारिकता का तात्पर्य परिस्थिति की अनुकूलता से है। ईगो हमेशा सतर्क रहता है कि प्रतिकूल समय या प्रतिकूल परिस्थिति में व्यक्ति अपनी किसी भी अनैतिक, कामुक या असामाजिक इच्छा की सन्तुष्टि करके अपने लिए खतरा मोल न ले सके। वह केवल अनुकूल परिस्थिति में ही ऐसी इच्छाओं की सन्तुष्टि होने देता है ताकि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। यह गुण न तो इड में है और न सुपर ईगो में है।

3. ईगो वास्तविकता सिद्धान्त का पालन करता है (The ego follows reality principle)

ईगो (ego) की एक मुख्य विशेषता यह है कि हमेशा वास्तविकता (reality) के सिद्धांत पर कार्यरत होता है। यह केवल ऐसी चीजों पर विचार करता है जो व्यावहारिक तथा सम्भव होती है। किसी भी क्रिया या इच्छा को प्रोत्साहित करते समय वह भौतिक वास्तविकताओं को ध्यान में रखता है। समय, स्थान तथा परिस्थिति की अनुकूलता होने पर अनैतिक इच्छाओं की सन्तुष्टि में भी वह मदद करता है और प्रतिकूलता होने पर ऐसी इच्छाओं की सन्तुष्टि पर रोक या प्रतिबन्ध लगा देता है। अत: अहं (id) तथा सुपर ईगो (superego) का धर्म क्रमश: सुखवाद तथा नैतिकतावाद होता है, वहीं भौतिक वास्तविकता ही ईगो का धर्म होता है।

4. ईगो चेतन होता है (The ego is conscious)

ईगो की एक विशेषता यह है कि यह चेतन होता है। चेतन होने के कारण ईगो को वास्तविक जगत की जानकारी रहती है। उसे समय, स्थान तथा परिस्थिति का बोध रहता है।

5. ईगो में तार्किक दोष नहीं होता है (The ego has no logical fallacy)

ईगो की उपर्युक्त परिभाषाओं तथा इसके विश्लेषण (analysis) से इसका स्वरूप कुछ हद तक साफ हो चुका है। लेकिन, सुविधा के लिए इसके स्वरूप या विशेषताओं को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

1. इड का सतही भाग है (The ego is the superficial portion of the Id) —

ईगो वास्तव में अर्जित (acquired) होता है। यह इड का ही एक सतही भाग होता है। इड से अलग इसका कोई मौलिक अस्तित्व नहीं होता है। अतः इड को आदिम या प्राथमिक हैसियत प्राप्त होती है जबकि ईगो को मात्र द्वितीयक हैसियत होती है।

2. ईगो समय तथा स्थान का ज्ञान रखता है (The ego is aware of time and place) —

ईगो को भौतिक वास्तविकता का ज्ञान रहता है। उसे इस बात का बोध रहता है कि किस कार्य को किस समय तथा किस स्थान या परिस्थिति में करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे समय, स्थान तथा परिस्थिति का पूर्ण ज्ञान रहता है और इस ज्ञान

Scanned with CamScanner

से ही शिशु के शारीरिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न तनाव के परिणामस्वरूप विकसित होता है। फ्रायड (Freud) के अनुसार बच्चों को अपने जीवन में पहली निराशा तब महसूस होती है, जब उसे दूसरे बच्चों के जन्म लेने या किसी अन्य कारण से माता अपने स्तन से दूध पिलाना छोड़ देती है। अब तक वह अपने जीवन को केवल आनन्दधाम (paradise) मानता रहा था किन्तु इस निराशा के परिणामस्वरूप उसका यह भ्रम दूर होने लगता है और वह मानने लगता है कि जीवन में दुःख भी है और बाधायें भी हैं। इसी चेतना के साथ दुश्चिन्ता का आरम्भ होता है। जैसे-जैसे उसे अपनी इच्छाओं की सन्तुष्टि में बाधायें उत्पन्न होती हैं और निराशा का अनुभव होता है, दुश्चिन्ता विकसित होता जाता है। शिश्न प्रधान अवस्था (Phallic stage) में बच्चों को सबसे अधिक बाधाओं का सामना करना होता है, तथा अधिक निराशाओं से लाचार होना पड़ता है। अतः इस अवस्था में दुश्चिन्ता विकास सबसे अधिक होता है। यह अवस्था 2½ वर्ष से 4 वर्ष की आयु तक सामान्यतः रहती है। सरासन एवं सरासन (Sarason and Sarason, 2002) ने दुश्चिन्ता को परिभाषित करते हुए कहा है, "दुश्चिन्ता आत्मन का वह भाग है जो चेतन होता है तथा वास्तविकता के सम्पर्क में सबसे अधिक होता है और व्यक्तित्व के कार्यकारी पदाधिकारी के रूप में कार्य करता है।"

= स्वरूप या विशेषतायें (Nature or characteristics)

क्योंकि इड में न तो अतीत की घटनाओं की चेतना रहती है और न भविष्य की सम्भावित घटनाओं की प्रत्याशा (anticipation) होता है। यह तो जैविक रूप से अनुकूलित (biologically conditioned) होता है और जंगली पशु (wild animal) के समान अपनी तात्कालिक इच्छाओं की सन्तुष्टि चाहता है।

इड के कार्य (Functions of Id) — इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि इड मन (mind), आत्मन् (self) या व्यक्तित्व (personality) का प्राथमिक गत्यात्मक भाग (primary dynamic part) है, जिसमें उपयुक्त कई विशेषताएँ पायी जाती हैं और जिसके द्वारा कई तरह के कार्य संचालित होते हैं। सच तो यह है कि प्रत्येक कार्य का मूल स्रोत इड ही है।

ईगो (Ego)

मन के गत्यात्मक पक्ष (dynamic aspect) के दूसरे भाग को ईगो कहते हैं। यह जन्म के समय बच्चों में उपस्थित नहीं रहता है, बल्कि बाद में विकसित होता है। वातावरण से उत्पन्न निराशा या कुण्ठा (frustration) के कारण इड से ही एक दूसरा गत्यात्मक भाग (dynamic) विकसित हो जाता है, जिसे ईगो कहा जाता है। चैपलिन (Chaplin, 1975) के शब्दों में, "ईगो का तात्पर्य इड अथवा आदिम शिशु-मन के उस सतही भाग से है, जो इड

जाता है। दूसरे शब्दों में, इड दो विरोधी इच्छाओं के दुविधा (dilemma) में नहीं फँसाता है। यह हर परिस्थिति में केवल सुखवाद की नीति (policy of hedonism) पर आधारित होता है और इसके विरुद्ध किसी प्रकार के समझौता में विश्वास नहीं करता है। इसलिए, यह द्वन्द्वों या संघर्षों से मुक्त होता है। अपनी इस विशेषता के कारण इड वास्तव में ईगो से भिन्न होता है।

9. दोषभाव का अभाव (Lack of guilt feeling) — इड वास्तव में दोषभाव या पछतावा (remorse) के भाव से मुक्त होता है। यह व्यक्ति को गलत कार्य करके भी आनन्द या सुख प्राप्त करने के लिए बाध्य करता है। बच्चों में इड ही प्रधान होती है। इसलिए वह गलत काम करने के बाद भी पछताता नहीं है। यदि कोई वयस्क किसी अनैतिक कार्य करने के बाद पछताता करता हो तो इसका कारण इड नहीं होगा, बल्कि सुपर ईगो होगा। अपनी इस विशेषता के बल पर इड एक ओर ईगो से भिन्न है और दूसरी ओर सुपर ईगो से।

10. भविष्य उन्मुखता का अभाव (Lack of future orientation)

व्यक्ति को ऐसे कार्यों को करने के लिए बाध्य करता है जो आनन्ददायक या सुखद होता है, चाहे वह कार्य अनैतिक हो या नैतिक, कामुक (Sexual) हो या अकामुक (non-sexual)। इस अर्थ में यह सुपर ईगो से भिन्न है।

6. तार्किक दोष (Logical fallacy) — इड में तार्किक दोष पाया जाता है। यह व्यक्ति को ऐसे कार्यों को करने के लिए बाध्य करता है जो परस्पर विरोधी होते हैं, वे तर्कसंगत नहीं होते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि इड पूर्णत: अचेतन होता है। इस अर्थ में यह ईगो से भिन्न है।

7. वास्तविकता का अभाव (Lack of reality) — इड में वास्तविकता का अभाव पाया जाता है। अचेतन होने के कारण इसे जीवन की वास्तविकताओं (reality of life) की जानकारी नहीं होती है। यही कारण है कि यह व्यक्ति को ऐसे कार्यों को करने के लिए बाध्य करता है जो वास्तविकता के अनुकूल नहीं होते हैं। एक बच्चा (जिसमें इड की प्रधानता होती है) अपने पिता को चंदा मामा ला देने के लिए बाध्य इसलिए करता है कि उसे इस बात की चेतना नहीं होती है कि ऐसा करना असम्भव है। इस विशेषता के कारण यह ईगो तथा सुपर ईगो दोनों से भिन्न है।

8. द्वन्द्व का अभाव (Lack of conflicts) — इड की विशेषता यह है कि इसमें किसी तरह का द्वन्द्व या संघर्ष (conflicts) नहीं पाया

ध्वंसात्मक मूल प्रवृत्ति से प्रभावित होकर व्यक्ति आक्र- या दूसरों के लिए ध्वंसात्मक कार्य करता है अथवा अपना अथवा दूसरों से घृणा करता है। ये दोनों मूल प्रवृत्तियाँ इड में ही रहती हैं। अतः इड कभी रचनात्मक कार्यों के माध्यम से और कभी ध्वंसात्मक कार्यों के माध्यम से सुख या आनन्द प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को बाध्य करता है। इन मूल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति की क्रिया को विरेचन कहते हैं जो आत्मनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ दोनों होता है। इन दोनों प्रकार के विरेचनों का एक मात्र उद्देश्य सुख या आनन्द की प्राप्ति होता है। इस दृष्टिकोण से इड ईगो तथा सुपर ईगो दोनों से भिन्न है।

4. पूर्णतः अचेतन (Wholly unconscious) — इड की एक विशेषता यह है कि यह पूर्णतः अचेतन होता है। इसे वास्तविकता की चेतना नहीं रहती है। इसलिए, यह व्यक्ति को ऐसे सभी कार्यों को करने के लिए बाध्य करता है जो सुखद तथा आनन्ददायक होते हैं, चाहे वे वास्तविक हो या अवास्तविक, सामान्य हो या असामान्य।

5. अनैतिकता (Immorality) — इड में अनैतिकता की विशेषता पायी जाती है। अचेतन होने के कारण इड को इस बात का ज्ञान नहीं होता है कि कौन-सा कार्य नैतिक है और कौन-सा कार्य अनैतिक है। वह केवल इतना जानता है कि उसे सुख या आनन्द प्राप्त करना है। इसलिए, वह व्यक्ति

Scanned with CamScanner

(i) आधारभूत अंश है। यह जन्मजात होता है। जन्म के समय बच्चों में केवल इड होता है। बाद में वातावरण के प्रभाव के कारण मानसिक मन के दो और भाग अर्थात ईगो (ego) तथा सुपर ईगो (super ego) विकसित होते हैं। इसीलिए, रेबर (Reber, 1995) ने इड को आदिम प्रवृत्ति (primitive urge) कहा है। इस विशेषता के कारण यह ईगो तथा सुपर ईगो से भिन्न है।

2. सुख का सिद्धान्त (Pleasure principle) — इड हमेशा सुख के नियम या सिद्धान्त पर कार्यरत होता है। वह केवल ऐसे कार्यों को करने के लिए व्यक्ति को बाध्य करता है, जिनसे सुख मिलने की आशा होती है, चाहे कार्य नैतिक हो या अनैतिक, सामाजिक हो या असामाजिक, समय तथा स्थान के अनुकूल हो या प्रतिकूल। इसी कारण रेबर एवं रेबर (Reber and Reber, 1995) ने कहा है कि, इड पूरी तरह सुखवादी या भोगी (hedonist) होता है। इस आधार पर यह ईगो तथा सुपर ईगो दोनों से भिन्न है।

3. मूल प्रवृत्तियों का पात्र (Container of instincts) — फ्रायड (Freud) ने दो तरह की मूल प्रवृत्तियों का उल्लेख किया, जिन्हें जीवन मूल प्रवृत्ति (life instinct) तथा मृत्यु मूल प्रवृत्ति (death instinct) कहते हैं। जीवन मूल प्रवृत्ति को रचनात्मक मूल प्रवृत्ति तथा मृत्यु मूल प्रवृत्ति को ध्वंसात्मक मूल प्रवृत्ति भी कहते हैं। रचनात्मक मूल प्रवृत्ति से प्रभावित होकर व्यक्ति अपने या दूसरों के लिए रचनात्मक कार्य करता है तथा/अथवा अपने से तथा दूसरों से प्रेम

पृष्ठभूमि (family background) से सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी हासिल करना सम्भव होता है। इसी आधार पर असामान्य व्यवहार का निरूपण (diagnosis) सम्भव बन जाता है।

मन के गत्यात्मक पक्ष

इड (Id)

इड वास्तव में मन, आत्मन या व्यक्तित्व के गत्यात्मक पक्ष का पहला संघटक (component) है जो सबसे अधिक मौलिक तथा गहरा है। इसकी व्याख्या करते हुए रेबर एवं रेबर (Reber & Reber, 2001) ने कहा है कि, "मन के फ्रायडवादी त्रिपक्षीय मॉडल में इड वह भाग है जो आदिम, पाशविक, इन्स्टिंक्ट, गंदला, कामुक, तथा तात्कालिक संतुष्टि की माँग करने वाला होता।"

स्वरूप या विशेषताएँ (Nature or Characteristics)

इड (id) की उपयुक्त परिभाषा के आलोक में इसके स्वरूप (Nature) तथा विशेषता (characteristic) के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण हैं:—

1. प्राथमिक भाग (Primary part) — इड की एक विशेषता यह है कि यह गत्यात्मक मन (dynamic mind) का

असंरचित साक्षात्कार (unstructured interview) |
असंरचित साक्षात्कार में निश्चित एवं मानक प्रश्नों का उपयोग किया जाता है जबकि असंरचित साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार के समय ही आवश्यक प्रश्नों का निर्माण तथा उपयोग स्वतन्त्रतापूर्वक करता है। फिर आवश्यकता अनुसार वैयक्तिक साक्षात्कार (individual interview) तथा सामूहिक साक्षात्कार (group interview) का उपयोग किया जाता है।

मूल्यांकन (Evaluation)
गुण (Merits)

एक नैदानिक प्रविधि (clinical technique) के रूप में साक्षात्कार के निम्नलिखित गुण हैं :—

i) साक्षात्कार के उपयोग से व्यक्ति का गहन अध्ययन (intensive study) सम्भव होता है। आवश्यकता अनुसार व्यक्ति से अधिक संगत प्रश्नों के माध्यम से साक्षात्कार देने वाले के सम्बन्ध में गहन रूप से संगत सूचनाएँ प्राप्त करना सम्भव होता है।

ii) इस विधि में एक गुण यह भी है कि इसके द्वारा साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के शारीरिक हाव-भाव (bodily gestures) तथा व्यवहार करने के ढंग का अध्ययन करना सम्भव होता है।

iii) इस विधि से साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के पारिवारिक

इसे भी पक्षपातरहित होना चाहिए।

इस विधि के सम्बन्ध में एक और कठिनाई यह है कि यह आवश्यक नहीं है कि एक ही घटना या बात का अर्थ विभिन्न मनोवैज्ञानिक एक तरह लगावें या उसको समान महत्व दें। फ्रॉयड, युंग, एडलर सबका अपना अपना मत हो सकता है। वास्तव में, इस विधि की सफलता बहुत कुछ उसके प्रयोग करने वाले मनोवैज्ञानिकों की दक्षता, प्रशिक्षण एवं निष्पक्षता पर निर्भर करती है; क्योंकि यह विधि यथार्थ (exact) विधि नहीं है। अन्त में, यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त दोष के होते हुए भी इस विधि का स्थान खासकर असामान्य मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण है।

मनोविश्लेषण विधि
(Psychoanalytic Method)

किसी असामान्य व्यक्ति की असामान्यताओं का पूर्ण परिचय पाने के लिए यह परम आवश्यक है कि उसके मन की अतृप्त इच्छाओं, भावों और धारणाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इनके सम्बन्ध में जानकारी के लिए मनोविश्लेषण की विधि का सहारा लेना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि यह अचेतन मन का क्षेत्र है। व्यक्ति की गुप्त इच्छाओं की जानकारी आसानी से नहीं हो पाती है और न वे सरल ढंग से व्यक्त ही हो पाती हैं। प्रायः ये गुप्त इच्छाएँ व्यक्ति के व्यवहार जैसे – पैर हिलाना, उंगलियाँ तोड़ना, दाँतों से नाखून काटना, सपने में चिल्ला उठना, आदि के द्वारा अभिव्यक्त होती हैं।

मनोविश्लेषकों के अनुसार कभी कोई मनोविकृति निरर्थक नहीं होती है। इसलिए इनका विश्लेषण और अध्ययन करना आवश्यक है।

उपर्युक्त विधि के अतिरिक्त मनोविश्लेषक असामान्य व्यक्ति के साथ एक सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करता है। उसका विश्वासपात्र बन जाता है और उसे अपनी बातों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। मनोविश्लेषक पर पूरा विश्वास रहने के कारण रोगी अपनी गुप्त बातों को निःसंकोच भाव से व्यक्त कर देता है। मनोविश्लेषक उनकी सारी बातों को लिखता जाता है और इसके आधार पर असामान्यता के कारण का पता लगाकर उसका उपचार करता है। वास्तव में, इस विधि का महत्व असामान्य मनोविज्ञान में इतना अधिक है कि इस पुस्तक में लेखक ने इसका विस्तृत विवेचन मनोचिकित्सा (Psychotherapy) के अध्याय में किया है।

साक्षात्कार विधि
(Interview Method)

× — ×

असामान्य व्यवहार के निदान (diagnosis) के लिए साक्षात्कार एक उपयोगी विधि है। इस विधि में साक्षात्कारकर्ता (interviewer) तथा साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के बीच आमने-सामने का सम्बन्ध

व्यक्ति इतिहास - लेखन विधि
(Case History Method)

X

इस विधि के द्वारा किसी एक व्यक्ति का अध्ययन एक समय में किया जा सकता है। अतः किसी स्नायु असामान्य व्यक्ति के बारे में जानकारी के लिए इस विधि का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रयोगों एवं अनुसन्धानों के द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति को असामान्य बनाने में परिवार की आर्थिक, सामाजिक एवं सांवेगिक स्थितियों का काफी प्रभाव पड़ता है। इसलिए असामान्य व्यक्ति का यथार्थ एवं विश्वस्त परिचय पाने के लिए यह परम आवश्यक है कि हम व्यक्ति के परिवार की आर्थिक, सामाजिक और मानसिक अवस्था का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। इसलिए उसके जन्म से लेकर असामान्य होने तक के जीवन का पूर्ण विवरण तैयार किया जाता है। इसके बाद इन सभी प्राप्त सामग्रियों का विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण के आधार पर पता चलता है कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहार या मानसिक रोग का मूल कारण क्या है। उसके असामान्य व्यवहार के मूल कारण जान लेने के बाद उसका उपचार किया जाता है।

इस विधि पर आधारित निष्कर्ष कहाँ तक सही है, यह उस व्यक्ति के परिवार से परिचय के सम्बन्ध में पक्षपात तो नहीं किया गया है, इस पर निर्भर करता है। अतः यह आवश्यक है कि उस व्यक्ति के सम्बन्ध में उसके आस-पास के लोगों से भी पूछताछ की जाये। हाँ, यह पूछताछ भी सावधानी के साथ करनी चाहिए।